पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

दसपर्णी अर्क

फसल का रक्षक

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

दर्शपर्णी अर्क क्या है?

दस प्रकार के पत्तों के मिश्रण से बना यह अर्क जैविक खेती में प्रयोग किया जाने वाला एक प्रभावकारी जैविक कीटनाशक है। जिसका उपयोग सभी प्रकार की फसलों/पौंधों में किया जा सकता है।

दर्शपर्णी अर्क
फसल का रक्षक

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा दसपर्णी बनाने का प्रशिक्षण

दशपर्णी अर्क बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- दशपर्णी अर्क मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में ही बनायें, धातु के बर्तन का प्रयोग कदापि न करें।
- इसे बनाने के लिए नीम और सीताफल के साथ कोई भी 8 प्रकार की ऐसी पत्तियां ली जा सकती हैं जिन्हें जानवर नहीं खाते।
- बनाने के बाद इसे हमेशा छाँव में ही रखें और घोल को सुबह शाम छड़ी की सहायता से जरूर हिलायें।

दर्शपर्णी अर्क बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1.	नीम की पत्ती	– 5 किलोग्राम
2.	कुर्रा/नौरंगा की पत्ती	– 2 किलोग्राम
3.	करंज की पत्ती	– 2 किलोग्राम
4.	कनेरी की पत्ती	– 2 किलोग्राम
5.	जट्रोफा या अरंडी की पत्ती	– 2 किलोग्राम
6.	निर्गुन्डी की पत्ती	– 2 किलोग्राम
7.	सीताफल की पत्ती	– 3 किलोग्राम
8.	कपास/अकाव की पत्ती	– 2 किलोग्राम
9.	पपीते की पत्ती	– 2 किलोग्राम
10.	गिलोय की पत्ती	– 2 किलोग्राम
11.	गौमूत्र	– 5 लीटर
12.	देशी गाय का गोबर	– 2 किलोग्राम
13.	पानी	– 170 लीटर
14.	प्लास्टिक ड्रम	– 1(200 लीटर क्षमता वाला)

दर्शपर्णी अर्क बनाने की प्रक्रिया

- सभी पत्तियों को टहनी से अलग कर लें और बाकी सामग्री के साथ इन्हें एक एक कर के प्लास्टिक ड्रम में डाल दें। फिर एक लकड़ी की सहायता से अच्छी तरह से मिला लें।
- अब बाल्टी का मुँह किसी कपडे से बांधकर छायादार स्थान में 30 दिन के लिए रख दीजिये। एक लकड़ी की सहायता से रोज सुबह शाम घडी की दिशा और विपरीत दिशा में 5 से 10 मिनट तक इस घोल को अच्छी तरह से हिलाते रहें।
- 30 दिन में यह अर्क पौंधों में छिड़काव के लिए तैयार हो जाता है। फिर इसे किसी सूती कपडे से छान लें और आवश्यकतानुसार प्रयोग करे।

दशपर्णी अर्क को उपयोग करने का तरीका

6 से 10 लीटर दशपर्णी अर्क को 200 लीटर पानी में घोल करके स्प्रे पंप की सहायता से लगभग दो एकड़ खेत में छिड़काव कर सकते हैं। बनाने का बाद 6 महीने तक इसका उपयोग किया जा सकता है। किसी भी प्रकार के कीटों से फसल के बचाव के लिए इसका छिड़काव किया जा सकता है।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक खेती के मित्र कीटों को बिना नुकसान पहुंचाये परभक्षी कीटों को भगाकर खेत और फसलों को कीटों द्वारा होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

दशपर्णी अर्क से होने वाले लाभ

यह कीड़ों विशेषकर रस चूसने वाले कीड़ों की रोकथाम में बहुत कारगर है। फसलों के परागण में सहायक कीटों, प्रोतिक परिजीवों, परभक्षियों को और पर्यावरण को यह किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचता है।

दसपर्णी बनाने का प्रशिक्षण लेते बैगा जनजाति के लोग